सूफ़ी काव्य साहित्य की प्रवृत्तियां
(विशेष सन्दर्भ मलिक मुहम्मद जायसी)

Dr. Jashbir Singh S/O Kartar Chand
H.N. 142 Tej Co.ony, Teshi. Camp
Panipat – Haryana, India 132103

मलिक मुहम्मद जायसी ने भक्तिकालीन सूफ़ी काव्य धारा (प्रेममार्गी शाखा) में भूमिका अदा कर सूफ़ी-सूर्य रूप में प्रसिद्ध हुए . जायसी ने सूफ़ी-प्रेम-काव्य धारा में पद्मावत, आखिरी कलाम, कहरनामा सहित कई रचनाएं लिखी . सामान्य और विशेष में काफ़ी अन्तराल होता है . सामान्य सर्वत्र हो और विशेष गैर-सर्वत्र होता है . जायसी काव्य की विशेषताएं भी गैर-सर्वत्र रूप में है . जो केवल एवं अधिक रूप में सूफ़ी-काव्य-धारा से ही मेल खाती है . वैसे जायसी को सूफ़ी-काव्य-धारा प्रवर्तक माना जाता है . उनके साहित्य में विषयवस्तु अंतर्गत प्रेम-व्यंजना, कथानक रूढियां, लोक-तत्व, सांस्कृतिक दृष्टि, प्रकृति-चित्रण, सौन्दर्य दृष्टि, रूपक तत्व आदि-आदि विशेषताएं विद्यमान है . उपरोक्त विशेषताएं ही जायसी का साहित्यिक योगदान है .

प्रेम-भावना सम्बन्धी:

रूप में सूफ़ी काव्यों में प्रेम की व्याख्या कुछ यूँ है. उनकी प्रेम-व्यंजना में आत्मसमर्पण-कष्ट सहिष्णुता, माधुर्य-रस, देवी सम्पदा, ईश्वरीय-सौंन्दर्य, परमसत्ता रूप में स्थापित किया है. जायसी की प्रेम-व्यंजना के स्वरुप अति-बहु-रूप में माना है. वे प्रेम को आग-पानी, जीवन-मृत्यु, साध्य-साधन, कठोर-कोमल, मादक सुरा-मोक्ष अमृत, संयोग-वियोग आदि-आदि स्थापित करते है . जायसी की प्रेम-भावना प्रेम वासना को धोती है तो प्रेम-भाव को शांत करती है .

“तीनि लोक चौदह खण्ड, सबै परे मोहि सुझि
पेय छांडि नहिं लोन किछु, जो देखा मन बुझि”

एषनाएँ का अंत एवं कामनाएं खाख होती है . चिंताओं की चिता बन जाती एवं बैचनी रुक जाती है . प्रेम-साधना लक्ष्य प्राप्त कर ज्ञान रूप में लिप्त हो जाती है .जायसी प्रेम-भावना में प्रेमी मोह-माया के जंजाल से मुक्त होकर अपनी द्वेष आदि पर लगाम लगाकर अपने द्वंदों को

मिटा, सब कठिनाइयों आदि को पार करता हुआ खुद ही दीपक-देखनहार बनकर प्रिय-प्रियतम बन सर्वेसर्वा रूप धारण कर कार्य करता है . अंत में वह (प्रेमी/प्रेमिका) पूर्ण अद्वैत प्राप्त कर अखंड आनंदस्वरूप में लीन हो जाता है . जायसी का आधार ग्रन्थ 'पद्मावत' लौकिक-प्रेम से पारलौकिक-प्रेम की और अग्रसर होता है एवं इसमें साहित्यिक 'इश्क हकीकी' के दर्शन होते हैं . जायसी की प्रेम-भावना में प्रेम रूप में विरह-अग्नि, सदैव-मिलन, रात्रि-बैचेनी, दिन-सुख आदि है . जायसी प्रेम को कर्म, धर्म, पंथ, मुक्ति, स्वप्न, सुषुप्ति, जीवन-मरण सम्बन्धी तत्व विद्यमान है . एक पद्यांश प्रस्तुत है

"प्रेम घाव दुख जा न कोई । जेहि लगि जाने पै सोइ ॥
परा सो पेम समुद्र अपारा । लहरहि लहर होइ बिसभारा ॥
विरह भंवर होई भांवरी देह । खिन-खिन जीव हिलोरहि तोई ॥
खिनहि निसास वूडि जिअ जाई । खिनहिं उठे निससै बौराई ॥
सिनहि पति खिन होई मुख सेता । खिनहि चेत खिन होई अचेता ॥
कठिन मरन तें पेम व्यवस्था । न जिअं जिवन न दसई अवस्था ॥"[1]

सूफ़ी काव्य प्रेम भावना में जायसी ने सर्वव्यापकता, सार्वभौमिकता, शीर्ष, अतियता, सर्वत्र का गंभीरतापूर्वक समायोजन किया है . जायसी ने प्रेम-व्यंजना में आध्यत्मिकता, प्रतीकात्मकता, अनन्यता, एकाग्रता सहित फारसी प्रभाव भी स्थापित किया है .

कथानक रूढ़ियाँ सम्बन्धी

जायसी के सूफ़ी-काव्य की आधारभूत प्रवृति सिद्ध हुई है . कथाकार काव्य में रोचकता एवं निरंतरता स्थापना हेतु प्रसंगों, प्रतीकों, कहानियों, किस्सों, आदि का प्रयोग किया करते है जिन्हें 'कथानक रूढ़ियाँ' की संज्ञा दी जाती है . जायसी ने इन्हें कहानियों एवं आख्यानों माध्यम से अपने साहित्य में प्रस्तुत किया है . जायसी ने इन कथानक रूढ़ियों में 'द्वीप पर सुंदर स्त्री मिलन' के माध्यम से पद्मिनी की प्राचीनतम कथा का समायोजन किया है जो सात-समुन्द्र पार, नौ-द्वारों के पहरों पर सैनिकों की निगरानी में रहती है उसका वर्णन किया है . उसके सौन्दर्य से चन्द्रमा-कैलाश आदि प्रभावित होते दिखाए है . ऐसी सुन्दरी द्वीप पर नायक को मिलती है जिसे कथानक रूढ़ि रूप में स्थान दिया. 'पक्षी द्वारा सम्प्रेषण कला' रूप में जायसी जी

[1] सम्पादक डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल, पद्मावत, पृष्ठ 134-135,

ने तोतें, हंस, सुक को कथानक रूढ़ि दिखाया है .पक्षियों का सौन्दर्य भी कथानक-रूढ़ियाँ रूप में द्रष्टव्य है. भारतीय संस्कृति में राजाओं को 'सिद्धि-प्राप्ति हेतु जोगी बनना' दिखाया गया है . पद्मावती के सौन्दर्य को हीरामन तोते से सुन रत्नसेन, पूरण, गोपीचंद आदि उसकी प्राप्ति-हेतु जोगी रूप धारण कर लेते है. जायसी ने 'प्रेमोदय: स्वप्न-दर्शन एवं चित्र दर्शन प्रयोग' माध्यम से उत्पन्न किया है. जायसी ने 'दूती' कथानक रूढ़ि के मध्यम से दूती द्वारा भेष बदल, धार्मिक मोह में बाँध, विवेक चालाकी-भय सहित लोभ-माया दिखा नायिका का हृदय-परिवर्तन हेतु रूप में दिखाया गया है. हीरामन तोता एक-स्थान पर रत्नसेन को पद्मावती का सौन्दर्य-रूप दिखाकर रत्नसेन को बेहोश करा देता है. जायसी ने कथानक रूढ़ि में 'सात-समुंद्र' को दिखाया है . इन सात समुंदरों के नाम खारे, खीर, दधि, उदधि, सुरा, किलकिला, मानसर है. मानसर खण्ड का प्रस्तुत अंश-

एक दिवस पुन्यों तिथि आई। मानसरोदक चली नहाई॥
पद्मावती सब सखी बुलाई। जनु फुलवारी सबै चलि आई॥
कोइ चंपा कोइ कुंद सहेली। कोइ सु केत करना, सब बेली॥
कोइ सु मौलसिरी, पहुपावती। कोइ जाही जूही सेवती॥
कोइ सानेजरद, कोइ केसर। कोइ सिंगार हार नागेसर॥
कोइ कूजा, सदबर्ग चमेली। कोइ कदम सुरस रस बेली॥
चलीं सबै मालती सँग, फूलीं कँवल कुमोद
बेधि रहे गन गंधरब, बासपरम दामोद"[2]

ये भारतीय कथानक में अपना विशेष स्थान रखते है . जायसी ने 'देवी प्रकोप' माध्यम से किलकिला समुंद्र में लहरें उठना, समुंद्र में बेलगाम वायु चलना, समुंद्री जहाज का डूब जाना एवं राक्षस द्वारा समुंद्र-भंवर में डालना आदि-आदि देवी-प्रकोप रूप में दिखाया गया है . 'पार्वती द्वारा परीक्षा लेना' जायसी के कथानक रूढ़ि रूप में विद्यमान है. यह परीक्षा रत्नसेन की होती है

[2] जायसी ग्रंथावली, सम्पादक आचार्य रामचंद्र शुल्क, प्रकाशन संस्थान, प्रथम संस्करण 2013 नयी दिल्ली-110002 पृष्ठ संख्या 187,

जिसमें वह सफल होता है और बाद में शिव-स्तुति होती है . 'महादेव द्वारा सिद्धि-दान' प्रदान करना दर्शाया गया है. ऐसे सिद्धि-दान में महादेव की कृपया अनिवार्य बताई गई है. महादेव स्वयं नायक का मार्गदर्शन करता है तथा राजा को सिद्धि-गुटका भी प्रदान करते है. 'लगभग सभी देवताओं द्वारा मदद करना' जायसी के सूफी काव्य की कथानक रूढ़ि बनकर उभरी है. रत्नसेन-पद्मावती मिलना हेतु देवता गण भाट रूप करते है. देवताओं में सर्वोच्च महादेव, ब्रह्मा, विष्णु, शेषनाग, 33 करोड़ देवता, 96 कोटि मेघ, 50 अग्नि-जल, सवा लाख पर्वत, 9 नाथ, 84 सिद्ध, गरुड़ एवं गिद्ध की सहायता नायक/नायिका हेतु की जाती है. कथानक रूढ़ि के अंतर्गत 'स्वयं समुंद्र द्वारा ब्राह्मण वेश धरना' सूफी काव्य की प्रवृति है. यह राजा-रानी को जुदा कर देते और वियोग में राजा आत्मदाह का प्रयास करता है तथा समुंद्र द्वारा रानी से मिलाने का आश्वासन मिलने पर बैशाखी पकड़ाकर नायक को मंजिल तक पहुंचाता है. जायसी ने 'समुंद्र उत्पन्न रत्नों' को कथानक रूढ़ि में समायोजित किया है. उन्होंने चार रत्नों में हंस रत्न, सोनहा पक्षी का वंशज रत्न, शार्दुल-शावक रत्न और पारस पत्थर रत्न को कथावस्तु में स्थान दिया है. जायसी ने 'यक्षिणी-सिद्धि' कथानक रूढ़ि के अंतर्गत एक दिन अमावस्या की रात्रि चंद्रमा दिखा असम्भव कार्य करके दिखाया. जायसी ने 'सती' सम्बन्धी कथानक रूढ़ि के मध्यम से कथावस्तु रूप में उस समय में सामन्ती युग आधारित जन्म-जन्मान्तर सम्बन्धी धारणा के नारी को सती-प्रथा जैसे रीति-रिवाजों में दर्शाया है.

लोक तत्व सम्बन्धी

जायसी की प्रवृत्तियों में जनजीवन सम्बन्धी चित्रण दर्शाया है. लोकतत्त्व का अर्थ समाज में लोक-जीवन एवं उनके रहन-सहन आदि से लिया जाता है. जायसी को सूफ़ी सिद्धांतों के ज्ञाता संग भारतीय परिवेश में जीवन यापन करते दीखते है. जायसी की सूफ़ी-काव्य-प्रवृतियों में 'जन-जीवन' द्वारा उच्च वर्ग (ऐश्वर्य) जिनके पास सरोवर, तालाब, मेवे, और बड़े-बड़े विशाल बाज़ार है. उनके वस्त्रों संग आभूषण दिखाए. मध्यमवर्ग वो थे जो धनवानों के पास कार्य करते थे. निम्न वर्ग में खेती, खेल, मजदूरी, नाचने वाले आदि शामिल है. 'नारी की दयनीय स्थिति' में पितृपक्ष प्रधान दर्शाया है जहाँ पत्नी पति पर निर्भर है तथा कुछ महिलाएं महलों में नौकरी भी करती है. समाज में पुरुष वर्ग अपनी प्रभुता रखता है. एक अंश प्रस्तुत है-

"तिन्ह संतति उपराजा भाँतिन्ह भाँति कुलीन
हिन्दु तुरक दुवौ भए अपने अपने दीन"[3]

समाज में स्त्री को विलासिता वस्तु माना जाता है तथा निम्नवर्ग महिलाएं दासी जीवन जीती है. समाज में हिन्दू महिलाएं मुस्लिम शासकों से डरती एवं कुछ महिलाएं वेश्याओं का काम करती है.

आदि पिता जो अहा हमारा। ओह नहिं यह दिन हिएं विचारा॥
छोह न कीन्ह निछोहैं। गा हम बेचि लागे एक गोहूँ॥
मकू गोहूँ कर हिय बेहराना। पै सो पिता नहिं हिए॥"[4]

जायसी ने लोक तत्व के माध्यम से प्रयाग-बनारस-द्वारिका-केदारनाथ-अयोध्या-हरिद्वार-मथुरा, बद्रीनाथ, रामेश्वर, त्रिवेणी, कुरुक्षेत्र, गोरखनाथ आदि तीर्थ-स्थलों को स्थान दुनी है. भारतीय समाज में अवतारवाद दिखाया गया है. जायसी ने समाज में सती-प्रथा को दर्शाया है. बेटी घर से विदा होकर पूर्णरूपेण पति के पराधीन हो जाती है. विवाहित नारी पति संग सम्मानित और विधवा रूप में सदैव अपमानित होती रहती है. पति के मरते ही पत्नी को मरना होता था और उसको मारने की व्यस्था रूप में जोर-जोर से बाज़ा बजाना. दान-पूण्य जैसी क्रियाएं करना, सात-बार शव परिक्रमा करवाकर आग में डाल दिया जाता था. क्षत्रिय वीर गति प्राप्त वीरता दिखाते है जिसे जोहर की संज्ञा दी जाती है. जायसी ने लोकतत्व प्रवृति में 'पर्व-त्योहारों' को भी स्थान दिया है. भारत जैसे देश में पति-आयु वृद्धि हेतु कारवां का वर्त दिखाया है. समाज में सावन माह में तीज त्यौहार पर झूला झूलना, कार्तिक माह में दीपावली तथा अगहन माह में नव-वस्त्रों को धारण किया जाता है. जायसी जी ने 'विवाह-विधि' को सामाजिक इकाई परिवार को बढ़ाने हेतु दर्शाया है. विवाह मांगलिक कार्यों के लिए पगड़ी-धारण, घोड़ी-सवार, द्वार-सजावट, मंडप एवं चौक की पूजा, कहार-केवट, जल-कलश, दम्पति गठबंधन, पंडित द्वारा वेद-पाठ, सात फेरों से पूर्व वर-माला आदि को दर्शाया गया है. डॉ. अमरबहादुर

[3] जायसी ग्रंथावली (सं) माताप्रसाद, हिंदुस्तान एकेडेमी, इलाहबाद, पृष्ट 656, प्रकाशन संस्करण 1952

[4] पद्मावत, जायसी ग्रंथावली, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, सं २०१३ पृष्ठ 586,

सिंह लिखते है, “कहरानामा में जायसी ने महरू अथवा कहार जाति के दो रूपों का वर्णन किया है- एक केवट होकर नाव चलाने, मछली पकड़ने पकड़ने तथा दूसरा डोली उठाने का ।”[5] सामाजिक में जायसी ने ‘धार्मिक विश्वासों’ में धरती को प्रथम मानकर वेदों में आस्था दिखाई है. भारतीय समाज में पंडित को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है. जायसी ने अपने काव्य में उपनिषदों, पुराणों एवं ऐतिहासिक काव्यों में कथाओं की समाहित किया गया है. समाज राम एवं कृष्ण की लीलाओं को दर्शाया गया है तथा साथ-साथ अर्जुन कथा, भीम कथा, श्रवण कथा, दुष्यंत-शकुन्तला कथा और राजा भोज के जीवन सम्बन्धी कथाओं को सूफी काव्य साहित्य की प्रवृति रूप में स्थापित किया गया. जायसी की लोकतत्व विशेषता दर्शाते हुए डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल जी लिखते है कि, “जायसी सच्चे पृथ्वी-पुत्र थे. वे भारतीय जनमानस के कितने निकट थे- इसकी पूरी कल्पना करना कठिन है. गाँव में रहने वाला जनता का जो मासिक धरातल है, उसके ज्ञान की जो उपकरण सामग्री है, उसके परिचय का जो क्षितिज है उसी सीमा के भीतर हर्षित स्वर कवि ने अपने गन का स्वर ऊँचा किया है. जनता की उक्तियांब, भावनाएं और मानताएं मानो स्वयं छंद में बंधकर उनके काव्य में गूंज उठी .”[6]

सांस्कृतिक दृष्टि सम्बन्धी :

मलिक मुहम्मद जायसी मानव जीवन में मानव का सम्पूर्ण विकास को संस्कृति का वृत्त माना है. जायसी की सूफ़ी मत पर भारतीय दर्शन को संस्कृति का प्रभाव हमें बहुदेववाद, साख्य-मत, हिन्दू-सूफ़ी रहस्यवादी शब्दावली, वैचारिक उदारता, अल-गजाली आदि सांस्कृतिक दृष्टिकोण स्थापित किया है. भारतीय सूफियों जायसी ने सांस्कृतिक योगदान रूप में प्रेम-प्रधानता, काव्य-दृष्टि, विस्मृति और पुन: प्रस्थापित प्रक्रिया को अपनाया है. जायसी जी ने साहित्यिक भाषा रूप में अवधि को स्थान दिया.

जायसी ने ‘सामूहिक धार्मिकता’ का प्रचार प्रसार बौद्धों के अनुसार किया तथा हिन्दुओं की भांति वर्त-उपहास-संस्कारों को अपनाकर भजन-कीर्तन-सत्संग-लंगर आदि सामूहिकता को अपनाया. उन्होंने ‘गुरु में देवत्व भाव’ रूप में गुरु-शिष्य सम्बन्ध, ज्ञान-प्राप्ति-साधन, शंकराचार्य एवं आलवारों की पूजा आदि पर जोर दिया. सूफ़ी सम्प्रदाय में मंदिरों का विकास भी होने लगा.

---

[5] कहरानामा मसलानामा, सम्पादक अमरबहादुर सिंह, हिन्दुतानी एकेडेमी, इलाहाबाद, पृष्ठ–89, प्रकाशन 1962

[6] पद्मावत, डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल,

रामानुज की गुरु परम्परा में भारतीय सूफ़ी मत के रूप में धार्मिक सांस्कृतिक दृष्टिकोण प्रदान किया. जायसी जी ने 'एकान्तिक प्रेम एवं अलौकिक आदर्श' सांस्कृतिक रूप स्थापित किया जिसमें उन्होंने इश्क-मजाजी और इश्क-हकीकी द्वारा दिव्य-प्रेम सम्भव बताया है. मानव प्रेम की भीतर ही ईश्वर-मार्ग पर चलकर स्वकीया और परकीया प्रेम में भिन्नता द्वारा अस्वीकार किया है. दरअसल सूफ़ी काव्य पर जायसी द्वारा निर्गुण-धारा-काव्य का प्रभाव दीखता है. गुरु को चमक लाने वालें की श्रेणी में रखा गया है. जायसी की 'भक्ति-भावना' हमें इस्लाम संदेह रूप में दिखती है. जैसे लिंगायत शैवों के जगतगुरु सूचकशब्द 'अल्लामा प्रभु' का साम्य भी अरबी-शब्दावली में है. जायसी की सूफ़ी सांस्कृतिक दृष्टि में परिवेशजन्य तथा क्रिया-प्रतिक्रिया-मूलक प्रभाव पर बल दिखाया है. अत: इसमें प्रतिवाद की रति भर कोई आशंका दिखाई नहीं देती. जायसी के 'साहित्यिक कला सम्बन्धी' में हिंदी की प्रेम गाथाओं की साहित्यिक अक्षुण्ण परम्परा की शुरुआत की. सूफी को अनमोल रत्न बताया. भारतीय साहित्य में फारसी-उर्दू महत्व स्थापित किया. अन्य बोलियों पर प्रभाव छोड़ा. जिसमें कव्वाली-गजल-खयान एवं गीतों का भरपूर प्रयोग किया गया. स्मरणीयता स्थापित की.

प्रकृति चित्रण सम्बन्धी:

जायसी की काव्यगत 'प्रकृति-चित्रण' के लगभग सभी चित्रण प्रयोग किये है. उन्होंने 'प्रकृति के उद्दीपन रूप' को मानव के संयोग अवस्था को मध्यनजर रखकर षडऋतु रूप में तथा वियोग रूओप में बारहमासा रूप में प्रकृति के उद्दीपनकारी मार्मिक चित्रण सफी काव्य प्रवृति रूप में किया है. इस प्रकृति रूप में जायसी जी ने स्वाभाविक, मार्मिक, मनोवैज्ञानिक मन:स्थिति का वर्णन भी किया है. जिसका माध्यम प्रकृति उद्दीपन रूप है. जायसी ने 'प्रकृति के आलम्बन रूप' में पक्षियों, तालाबों, समुंद्र आदि का चित्रण किया है. इस चित्रण में जायसी ने प्रकृति के उग्र (किलकिला समुंद्र), शांत रूप (मानसर समुंद्र) सहित कल्पना को मिश्रित किया है. कमल-फूलों का खिलना परन्तु समुंद्र में नहीं खिलते जैसे चित्रण किए है. सूफी काव्य में जायसी के समय का प्रभाव भी देखने को मिलता है. जायसी ने सूफी प्रवृति में 'प्रकृति के अलंकारिक रूप' में प्रस्तुत एवं अप्रस्तुत बिम्ब भावों को स्थान दिया है. अप्रस्तुत में मुहावरों रूप में प्रस्तुत अंश. 'पानी जईस बुलबुला होई'[7] रूप में कह सकते है. जायसी ने कमल के उपमान

[7] जायसी साहित्य में अप्रस्तुत योजना, डॉ. विद्याधर त्रिपाठी, लोकवाणी प्रकाशन, संस्करण-2008 दिल्ली-110093,

द्वारा विरह दग्धा नागमती का वर्णन प्राकृतिक रूप में शक्तिमान सूर्य-चन्द्रमा-कमल आधारित रचना की. जिससे नायिका की तुलना अतिशियोक्ति रूप में स्थापित की है. जायसी ने सूफी प्रवृति के अंतर्गत 'प्रकृति के वस्तु-परिगणना-रूढ़ि रूप' में लावा फुलवारी, जूही, सुगंध, गुलाल, चंपा, केवड़ा, फली और फूल आदि बड़ी-सूची गिनवाई है. ये कथा-वर्णन के प्रतिरोध एकत्रित करते है. जायसी की सूफी काव्य में इनकी बहुलता है. जायसी ने 'प्रकृति के प्रतीक-संकेत रूप' में नए प्रतीकों को अपनाया. प्राकृतिक अपदानों को अलौकिक भक्ति शक्ति एवं ब्रह्म को उपलक्ष्य रूप में भी दर्शाया है. उन्होंने आध्यात्मिकता को स्थान दिया है. वे सिंहलगढ़ को मानव शरीर मानना. इन प्रकृति रूप में समुंद्र को साधना को लंब संकटों से परिपूर्ण माना तो सात-समुंद्र को कठिनाइयों के रूप में में माना. जायसी ने सूफी काव्य प्रकृति के माध्यम से नीति और उपदेश रूप में प्रयोग किया है. जायसी ने ' रूप-सौन्दर्य के उपमान रूप'में काव्य में मानव-भावों की अभिव्यक्ति हेतु रूप-सौन्दर्य के उपमान प्रकृति का प्रयोग किया है. जिसमें विरह अभिव्यक्ति सरोवर उपमान द्वारा वर्णन किया है. जायसी ने मानव की विषाद, हर्ष आदि मनोरम अभिव्यक्ति की है. जायसी ने 'प्रकृति के संवेदनशील रूप' के माध्यम से मानवीय भावों की अभिव्यंजना की साथ ही केशों की छाँव में श्यामलता-सघनता रूप में जगत को अंधेर में डूबते दिखाकर प्रकृति-चित्रण किया है. सूफी काव्य में जायसी का प्रकृति-चित्रण मुख्य-स्थान रखता है.

सौन्दर्य दृष्टि सम्बन्धी:

जायसी जी, सौन्दर्य के जितने आंतरिक पारखी थे उतने ही बाहरी पारखी भी थे. जिसमें उन्होंने कर्म-भाव एवं रूप सम्बन्धी सौन्दर्य को स्थापित किया तथा सूफी साहित्य को विभिन्न रोचकता, आकर्षण एवं मनोहक बनाया. जायसी जी के सौन्दर्य-दृष्टि प्रकारों में हम चित्र, बहुरूपता, मर्म-करीब और जीता-जागता रूप देखते है. जायसी जी, परम्परावादी कवि-लेखक रहे इसमें कोई सन्देश नहीं. जिनके अनुसार मांग, बरौनी, भौंह, अधर, कपोल, ग्रीवा, पेट, मुख, कटि आदि का अति-सुंदर उल्लेख किया है. जायसी प्रकृति प्रेमी भी अधिक रहे इसमें प्रकृति-सुन्दरीय रूप में दर्शायी गई है. जायसी सौन्दर्य दृष्टि में विरह वेदना का चित्रं अधिक गहनता, सजीवता, मार्मिकता और गंभीरता से करते है. जायसी के 'भाव-सौन्दर्य रूप' में सजीव और सुकुमार चित्र प्रस्तुत किए है. वही जायसी 'कर्म सौन्दर्य रूप' की व्याख्या के अंतर्गत कर्म सौन्दर्य चित्र में चारुता एवं भव्यता सहित मेहनत, विश्वास, वीरता, भगवान् पर भरोसा आदि

चित्रण किये है. जायसी का ‘रूप सौन्दर्य’ प्रकृति रूप में दोनों रूपों सौम्य-भयानक में चित्रित हुआ.

रूपक तत्व सम्बन्धी:

मलिक मुहम्मद जायसी ने सूफी-काव्य प्रवृत्तियों में विशेषता रूप में ‘रूपक तत्व’ का समावेश किया है. उन्होंने अपने काव्यों में प्रेम-कथाओं में एक-एक रूपक कथा मानकर सृजन किया है और साहित्य को अन्योक्तियुक्त रूप स्थापित किया है. जायसी जी, कहते है कि पद्मावत में रत्नसेन (आत्मा), पद्मावती (परमात्मा), हीरामन तोता (गुरु), राघवचेतन (शैतान), नागमति (सांसारिक पंच) तथा अलाउद्दीन (माया) रूप में रूपक तत्व है. जायसी जी ने इन रूपकों को इस प्रकार साहित्य में प्रयोग किया है जैसे महाकाव्य-शैली में विस्तारपूर्वक कही गई एक ऐसी प्रेम गाथा जो युगों से लोक में एक आदर्श प्रेम-कथा रूप में प्रचलित है. जायसी जी सूफी थे इसलिए इनके कथावस्तु रूप में प्रेम-का-स्थान निश्चित किया गया. जिससे उनके साहित्य की प्रवृत्तियाँ हृदयस्पर्शी एवं संवेदनशीलता निर्माण कर गई. जिसके परिणामस्वरूप सूफी काव्य की प्रवृत्तियों में आध्यात्मिकता के दर्शन होते दीखते है. जीवन में आत्मा-परमात्मा वाला रूपक तो इस पर सही रूप से घटित ही नहीं हो पाता बल्कि इस साहित्यिक प्रवृत्तियों में समाज में यथार्थ लोक/जन-जीवन का रंग बहुत अधिक है.

काव्य दृष्टि सम्बन्धी:

जायसी जी, सूफी साहित्यिक प्रवृत्ति में अपना जितना योगदान भाव-पक्ष से प्रस्तुत करते है उतना ही कला-पक्ष से अपना दृष्टिकोण स्थापित करते है. जायसी की समस्त काव्यों का प्रतिनिधित्व उनका ‘पद्मावत’ महाकाव्य करता है. जिनेम काव्य-दृष्टि भी उजागर होती है. भक्तिकाल में दो महाकाव्य (रामचिरतमानस एवं पद्मावत) लिखा गया उससे पूर्व पृथ्वीराज रासो महाकव्य तथा इनके पश्चात प्रिय-प्रवास का निर्माण हुआ. जायसी जी, सच्चे अर्थों के कला-प्रेमी भी रहे है. जायसी जी ने सूफी काव्य प्रवृत्तियों में चित्रात्मकता का समावेश किया जिसमें ‘नख-शिख खंड’, ‘बसंत-खंड’, ‘दूती-वर्णन’ आदि प्रयोग कर चित्रात्मकता दर्शायी है. जायसी जी ने बिम्बात्मकता रूप में वस्तु संश्लिष्ट रूप में नायिका के मुख को चन्द्रमा और शरीर मलयगिरी का चन्दन तथा बाल साँपों के समान दर्शाकर बिम्बात्मकता का प्रदर्शन किया है. जायसी जी ने प्रतीकात्मकता में प्रतीकों के मध्यम से अमूर्त को मूर्त, अदृश्य को दृश्य, अश्रव्य को

श्रव्य तथा अप्रस्तुत को प्रस्तुत रूप में बनाया. यथा: दशम दुआर= ब्रह्म-रन्ध्र, नवपौरी=नव इन्द्रियाँ आदि आदि. जोकि सूफ़ी साहित्यिक प्रवृत्तियां है.

जायसी जी की काव्य-दृष्टि प्रवृत्तियों में 'काव्य-रूप' में हम पद्मावत को एक महाकाव्य की उपाधि देते है. जिसमें प्रेम कथा के साथ-साथ शांत रस, वीर रस, करुण रस औरन रौद्र रस के दर्शन होते है. इन सबसे जायसी जी को श्रृंगार रस पसंद है. जायसी जी नायक-नायिका के चरित्र-चित्रण में स्वभागिकता-शालीनता-मार्मिकता प्रवृत्ति खूब देखने को मिलती है. जायसी जी 'शैली' रूप में उहात्मक, वर्णनात्मक, उपदेशात्मक एवं कथा-उपकथन रूप में प्रस्तुत करते है. जायसी जी की भाषिक प्रवृत्ति रूप हम अवधि भाषा का व्यवहारिक शब्दावली-मुहावरों-लोकोक्तियों का प्रयोग करते है. जिससे साहित्यिक भाषिक प्रवृत्ति में आकर्षण-लाक्षणिक एवं सारगर्भिता का समावेश होता है. जायसी जी 'अलंकार' प्रवृत्ति रूप में शब्दों अलंकारों एवं अर्थालंकारों का अधिक प्रयोग करते है. उनके प्रमुख शब्दालंकारोंअलंकार में अनुप्रास, यमक, श्लेष तथा अर्थालंकारों में उपमा, रूपक, अतिशयोक्ति, अन्योक्ति आदि का सुंदर प्रयोग किया गया. जिससे साहित्यिक प्रवृत्ति में सुन्दरता समाई है

अत: जायसी के काव्य में समाज की विषयवस्तु चित्रण भरपूर मात्रा में किया गया है. जायसी द्वारा सामन्ती जीवन सहित निम्न जातियों की अभिव्यक्ति की तथा मुस्लिम-धर्म दर्शन से लोगों को अवगत कराया. जायसी ने अपने समाज के लोक एवं शास्त्र की अभिव्यंजना की और के स्थानों पर लौकिक प्रेम को ईश्वर से बढ़कर माना. जायसी जी हिन्दुओं के प्रति सहानुभूति रखते है तथा भारतीयों को वृद्धमल संस्कृति की मनोहारी व्याख्या भी की है. सूफी काव्य में अतुल्य काव्य-वैभव का समावेश किया है. जायसी जी प्राकृतिक वातावरण के अंगभूतों के अंगभूतों वर्णन में पौराणिकता-सहित-काल्पनिकता के आवरण की निवारण किया है. जायसी ने अपने काव्य वर्णनों में सहज-संशिलष्ट एवं आलंकारिक शैलियों के साथ-साथ ज्योतिष, कामशास्त्र, पुराण, दर्शन, कला, राजनीति, आदि ज्ञान भी प्रदान किया है. उनका ज्ञान धार्मिक भक्ति और सामाजिक विज्ञान दोनों का मिश्रण भी है. जायसी जी पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग करते है. सामान्य जनजीवन के आवास, भोजन, उपकरण का प्रयोग शब्दावली रूप में किया है. उन्होंने लोकोतियों एवं मुहावरों में पाठकों की रुचियों, उनके साधनों, उनकी समस्याओं एवं उनके सामाजिक लक्ष्यों के संदर्भ में विपरीत-भावों तथा पदार्थों के मिश्रित समन्वय की अद्भुत

अक्षमता है. मलिक मुहम्मद जायसी जी प्रेमभाव, कथानक, विषयवस्तु, चरित्र-चित्रण, कला पक्ष आदि-आदि रूप में बहुज्ञ सिद्ध-काव्य-कवि है.

संदर्भ

1. जायसी ग्रंथावली, सम्पादक आचार्य रामचंद्र शुल्क, प्रकाशन संस्थान, प्रथम संस्करण 2013 नयी दिल्ली-110002 पृष्ठ संख्या 187
2. उर्रहमान, महमूद. "मलिक मुहम्मद जायसी - संक्षिप्त परिचय". इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र. अभिगमन तिथि: 2 अगस्त, 2017
3. https://hi.wikipedia.org/wiki/ मलिक_मोहम्मद_जायसी
4. सम्पादक डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल, पद्मावत, पृष्ठ 134-135,
5. जायसी ग्रंथावली (सं) माताप्रसाद, हिंदुस्तान एकेडेमी, इलाहबाद, पृष्ट 656, प्रकाशन संस्करण 1952
6. पद्मावत, जायसी ग्रंथावली, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, सं २०१३ पृष्ठ 586,
7. कहरानामा मसलानामा, सम्पादक अमरबहादुर सिंह, हिन्दुतानी एकेडेमी, इलाहाबाद, पृष्ठ-89, प्रकाशन 1962
8. जायसी साहित्य में अप्रस्तुत योजना, डॉ. विद्याधर त्रिपाठी, लोकवाणी प्रकाशन, संस्करण-2008 दिल्ली-110093
9. शेख, हारून (14 अप्रैल 2016). "मलिक मुहम्मद जायसी".
10. हिन्दी आर्टिकल्स.कॉम. अभिगमन तिथि: 2 अगस्त 2017.